nbt.india
एक: सूते सकलम्

साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

मार्च 2014 वर्ष 19, अंक 3

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला का समापन

15 से 23 फरवरी, 2014 तक आयोजित नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2014 का 'अगले वर्ष फिर यहीं मिलेंगे' की घोषणा के साथ समापन हो गया। पुस्तक मेला का थीम 'बाल साहित्य' पर केंद्रित था; सो, बाल-आधारित अनेकानेक गतिविधियाँ और कार्यक्रम हुए। कार्यशाला, संगोष्ठी, विमर्श, संवाद और बातचीत के दौर चले।

माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने पुस्तक मेला का उद्घाटन करते हुए पुस्तक और पठन पर अनेक बातें कहीं। स्वयं

पृ. सं. 2, कॉलम 1 पर जारी...

होली आई

रुद्रपाल गुप्त 'सरस', हरदोई, उ.प्र.

होली आई, होली आई
गाँव-गली में धूम मचाई
जाड़े का अब हुआ अंत है
आया मन भाया वसंत है
हँसते फूल हवा महकी है
कू-कू कर कोयल चहकी है
इसकी बोली सबको भाई
होली आई, होली आई!

संदर्भ : अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, 8 मार्च

तुम लड़ो कि जिंदगी महक उठे

उगा लो पंख
नाप लो ऊँचाइयाँ
भरो उड़ान! –आनंद बिल्थरे

यह समय स्त्री-उभार का समय है। स्त्रियाँ घर-आँगन से निकलकर देहरी लाँघ रही हैं, गाँव-शहर की सीमा लाँघ रही हैं। महानगरों में अकेली जाती लड़की/स्त्री एक सामान्य दृश्य है। 'लक्ष्मण रेखा' जैसी तमाम रेखाओं को पीछे छोड़ आई हैं स्त्रियाँ। स्त्रियाँ छुई-मुई नहीं हैं अब, वे अंतरिक्ष तक जा रही हैं। वेलेंतीना तेरेश्कोवा से लेकर सुनीता विलियम्स तक एक लंबा सिलसिला है स्त्री-उड़ान का।

अब प्रसाद की 'नारी, तुम केवल श्रद्धा हो...' से काफी आगे निकल चुकी हैं स्त्रियाँ। स्त्रियाँ अब वीरांगना हैं, झाँसी की रानी हैं, सरोजिनी और इंदिरा हैं। विश्व-परिदृश्य में देखें तो वे जॉन ऑफ आर्क हैं और सिरिमाओ भंडारनायके हैं। विश्व के कितने ही देशों में आज स्त्री राज्याध्यक्ष हैं। अब तो–

शाप नहीं, वरदान हैं बेटियाँ
खुशियों की दिनमान हैं बेटियाँ।

अशोक आनन

20वीं सदी स्त्री सशक्तीकरण की दिशा में मील का पत्थर साबित हुई। दरअसल, 1909 में सोशलिस्ट पार्टी ऑफ अमेरिका द्वारा पूरे अमेरिका में महिला दिवस मनाया गया। 1913 में यह महिला आंदोलन यूरोप तक में फैल गया, और यूरोप में ही, 8 मार्च को प्रथम विश्व युद्ध के घनेरे बादलों के बीच, शांति की कामना से

पृ. सं. 2, कॉलम 2 पर जारी...

महिलाओं को समाज में बहुत अहम भूमिका निभानी है। महिलाओं के प्रति समाज के नजरिए में बदलाव की जरूरत है। उन्हें ऐसा सुरक्षित और अनुकूल माहौल मुहैया कराने की जरूरत है जिसमें वे राष्ट्र-निर्माण में अपना योगदान कर सकें।

प्रणव मुखर्जी, भारत गणराज्य के राष्ट्रपति

एक दिन हिंदी एशिया ही नहीं विश्व पंचायत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। –**गणेश शंकर विद्यार्थी** (1929 में) पुण्यतिथि 25 मार्च, 1931

ही पुस्तकों के महान प्रेमी, राष्ट्रपति महोदय ने कहा–सब कुछ ज्ञान के लिए और सब के लिए ज्ञान। उन्होंने पुस्तक के पक्ष में कहा–''कोई भी मानव समाज पुस्तकों के बिना विकास नहीं कर सकता। पुस्तकें अपने साथ पीढ़ियों का ज्ञान लिये चलती हैं।'' इस अवसर पर संस्कृति मंत्री सुश्री चंद्रेश कुमारी कटोच ने भी संबोधन किए। उन्होंने कहा–''इस बदल रहे विश्व के साथ आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए केवल सही पुस्तकें ही आपकी सहायता कर सकती हैं।''

पुस्तक मेले में हजार से अधिक प्रदर्शक आए जिन्होंने दो हजार स्टॉलों/स्टैंडों में अपनी पुस्तकें प्रदर्शित कीं एवं बेचीं। दुनियाभर से लगभग 15 देशों से भी प्रकाशक आए। पुस्तक मेले में हजार से अधिक कार्यक्रम हुए। पुस्तक लोकार्पण, संगोष्ठी, विमर्श, चर्चा, संवाद, कार्यशाला–यानी पुस्तक संबंधी समस्त गतिविधियाँ हुईं। लेखक, प्रकाशक, पुस्तकप्रेमी सब एक जगह इकट्ठा हुए, मिले, बतियाए। पुस्तकें खूब बिकीं, नई पुस्तकें भी खूब आईं। पुस्तक मेला में नेता, अभिनेता, मंत्री आए; खिलाड़ी, समाजसेवी भी आए। लेखक मंच और साहित्य मंच पर नित दिन साहित्य संबंधी कार्यक्रम हुए। मेले में नाच-गाने भी हुए, गीत-ग़ज़ल के दौर चले, जादूगर के करतब भी हुए।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा आयोजित इस विश्व पुस्तक मेले की खास बात रही न्यास का ई-बुक्स के क्षेत्र में प्रवेश। माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, डॉ. एम.एम. पल्लम राजू द्वारा न्यास से अँग्रेजी में स्वामी विवेकानंद पर प्रकाशित दो ई-पुस्तकों के लोकार्पण के साथ ही न्यास ने ई-पुस्तक के क्षेत्र में कदम धर दिया। मंत्री महोदय ने कहा–''हमें विवेकानंद के विचारों को और फैलाना है। उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं।''

इस मेले में पोलैंड विशिष्ट अतिथि देश था। पुस्तक मेला का सह आयोजक था–आइटीपीओ। न्यास-अध्यक्ष ए. सेतुमाधवन एवं न्यास-निदेशक एम.ए. सिकंदर के कुशल निर्देशन में संपन्न यह पुस्तक मेला खूब सफल रहा।

संदर्भ :
विश्व जल दिवस, 22 मार्च

जल बिन जीवन जल जाता है
काम नहीं कुछ चल पाता है
जीवन का जल से नाता है
जल ही तो जीवनदाता है।

भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश', अकबरपुर, उ.प्र.

मुखड़े से घुंघटा हटाओ री सखी
पिंजरे से बाहर आओ री सखी
पढ़ना जरूरी है, लिखना जरूरी
दुनिया को मनमाफिक गढ़ना जरूरी।

स्त्रियों ने जुलूस निकाले। और तभी से विश्वभर में महिला दिवस मनाया जाने लगा। यानी, शांतिकामी महिलाओं ने युद्ध के विरुद्ध जो बिगुल बजाया वह स्त्री-उन्नयन और स्त्री-मुक्ति का भी प्रस्थान बिंदु बन गया। दरअसल, 1911 में यूरोप की लाखों महिलाओं ने मताधिकार हेतु एवं नौकरी में भेदभाव खत्म करने जैसी अनेक अन्य समान अधिकारों की माँग के समर्थन में पुरजोर आंदोलन शुरू कर दिया था। इस प्रकार, महिला दिवस की अवधारणा में महिलाओं को समुचित एवं पुरुषों के बराबर अधिकार की भावना सम्मिलित थी। यों, महिला आंदोलन की जड़, आधुनिक विश्व में, 1789 की फ्रांस की क्रांति में छुपी है। वह जड़ आज वटवृक्ष बन गई है।

जिंदगी ने एक दिन कहा कि तुम लड़ो
तुम लड़ो कि चहचहा उठे हवा के परिंदे
तुम लड़ो कि आसमान चूम ले जमीन को
तुम लड़ो कि जिंदगी महक उठे!

भारत के संदर्भ में देखें तो स्त्री शक्ति की धमक हम वेद काल में, गार्गी, अपाला और घोषा से देखते आए हैं। 12वीं सदी में रजिया सुल्तान पहली महिला शासक बनी थी। 19वीं सदी में झाँसी की रानी के साथ-साथ, सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में हम सावित्रीबाई फुले (ज. : 1831) और पंडिता रमाबाई (ज. : 1858) को देखते हैं। तदंतर, कस्तूरबा गाँधी महात्मा गाँधी की अर्द्धांगिनी के रूप में भारतीय महिलाओं के लिए आदर्श बनीं। मैडम भीकाजी कामा ने 1907 में जर्मनी में, आजाद भारत के प्रतीक के रूप में पहली बार झंडा फहराया। यह झंडा (परचम) खुद उन्हीं का डिजाइन किया और बनाया हुआ था। तबसे झंडे में अनेक परिवर्तन हुए और आज हमने चक्रयुक्त तिरंगा को राष्ट्रध्वज के रूप में मान्यता दी है। कहना न होगा कि हमारे राष्ट्रध्वज की अवधारणा एक स्त्री-मानस की ही देन है। भारतीय महिलाओं ने 1921, 1930 तथा 1942 के आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया था। सुभाष बोस द्वारा निर्मित रानी झाँसी रेजीमेंट तो महिला सिपाहियों का ही रेजीमेंट था। 16 वर्षीया कनकलता बरुआ को तिरंगा फहराने की कोशिश में अँग्रेजों द्वारा गोली मार दी गई थी।

1966 में देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री बनीं इंदिरा गाँधी ने, 1975 में अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष के उद्घाटन समारोह के अवसर पर कहा था, ''कोई काम ऐसा नहीं है जिसे महिलाएँ पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर नहीं कर सकतीं।'' इंदिरा जी ने सही कहा था।

अंत में, स्त्रियों के संबंध में एक स्त्री कवि की भावना को हम प्रस्तुत करना चाहते हैं : उन्हें खुला आसमान चाहिए / जहाँ वे उड़ सकें / उन्हें पंख मत दो / बस, बेड़ियाँ खोल दो!

जहाँ नारियाँ पूजी जाती हैं वहाँ देवताओं का वास होता है। –मनु

संदर्भ : विश्व गौरैया दिवस, 20 मार्च

लौट आओ नन्ही गौरैया

आकांक्षा यादव, इलाहाबाद

"पक्षी हमारे पर्यावरण के थर्मामीटर हैं, उनकी चहचहाहट बताती है कि धरती प्रसन्न है।" प्रसिद्ध पक्षिविज्ञानी सालिम अली अकसर ऐसा कहते थे। इस कथन मे सत्यता भी है। हम अपने घर-आँगन और परिवेश में नित दिन पक्षियों को देखते हैं, उनका कलरव सुनते हैं। गौरैया सर्वाधिक घरेलू पक्षी मानी जाती है। इसे 'हाउस स्पैरो' भी कहते हैं। मनुष्यों के सबसे निकट रहने वाला यह एक सामाजिक पक्षी है। लेकिन हमारे घर-आँगन के इस पक्षी पर विलुप्त होने का खतरा मँडराने लगा है। वैसे, आगामी सौ वर्षों में दुनिया की लगभग 1,100 प्रजातियों की पक्षियों के विलुप्त होने का खतरा है। दुनिया में पाई जाने वाली लगभग 9,000 प्रजातियों में से 1,250 के करीब प्रजातियाँ भारत में पाई जाती हैं। इनमें से 85 के विलुप्त होने का खतरा है। इससे जैव विविधता की कड़ी गड़बड़ा सकती है।

दरअसल, गौरैया सिर्फ एक चिड़िया का नाम नहीं है, बल्कि हमारे परिवेश, साहित्य, कला, संस्कृति से भी उसका अभिन्न रिश्ता रहा है। यह पक्षी लोककलाओं से साहित्य और संस्कृति तक फैली-पसरी है। प्राचीन काल से हमारे उल्लास, स्वतंत्रता, परंपरा और संस्कृति की संवाहक मानी जाती रही इस चिड़िया पर संकट अनेक कारणों से आया है। इसमें प्रदूषण, वन कटाव और मोबाइल टावर को मुख्य जिम्मेवार कारक माना जाता है।

गौरैया पर संकट के मद्देनजर दिल्ली सरकार ने 2012 में इसे 'राज्य पक्षी' घोषित किया। इसके संरक्षण के अनेक उपाय भी किए जा रहे हैं। दुनिया में पक्षी से संबंधित अनेक अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने मिलकर 20 मार्च को 'विश्व गौरैया दिवस' मनाने की घोषणा की। 2010 में पहली बार विश्व गौरैया दिवस मनाया गया। इसी वर्ष भारतीय डाक ने गौरैया पर डाक टिकट भी जारी किया।

हमें भी गौरैया संरक्षण हेतु अपना योगदान देना चाहिए, वरना ये केवल लोककथाओं और चित्रों में ही सिमटकर रह जाएँगी। गौरैया किलकेगी तो हमारे बच्चे भी किलकेंगे, गौरैया फुदकेगी तो हमारे बच्चे भी फुदकेंगे।

है महापाप
कन्या-भ्रूण की हत्या।
सोचिए आप,
कब तक समाज
ढोएगा यह पाप?
रामनिवास 'मानव', हिसार

भ्रूण हत्या
घोर पाप
बचो इससे!
सुगनचंद्र जैन 'नलिन'
गुना, म.प्र.

गाँधी जी की दांडी यात्रा, 12 मार्च

गाँधी जी ने 12 मार्च, 1930 को अपने 81 सत्याग्रही कार्यकर्ताओं के साथ साबरमती आश्रम से लेकर सूरत के दांडी गाँव तक की 245 मील की पदयात्रा की थी। दरअसल, दांडी मार्च केवल नमक बनाने का संघर्ष नहीं, वरन पूर्ण स्वराज्य की लड़ाई थी।

चल पड़े जिधर दो डग, मग में, चल पड़े कोटि पग उसी ओर
पड़ गई जिधर भी एक दृष्टि, पड़ गए कोटि दृग उसी ओर
जिसके सिर पर निज धरा हाथ, उसके शिर-रक्षक कोटि हाथ
जिस पर निज मस्तक झुका दिया, झुक गए उसी पर कोटि माथ।

युगावतार कविता का अंश —**सोहन लाल द्विवेदी,** नि. : 1 मार्च, 1988

भारत में 14 जनवरी, 1848 को जोतिबा फुले ने लड़कियों के लिए पहले स्कूल की शुरुआत की थी। इस स्कूल की पहली अध्यापिका बनीं उनकी धर्मपत्नी **सावित्रीबाई फुले**। 10 मार्च, 1897 को उनके परिनिर्वाण दिवस पर अखिल भारतीय दलित महिला संघ द्वारा महिला दिवस मनाया जाता है।

पंडिता रमाबाई (ज. : 1858, महाराष्ट्र) स्त्री-शिक्षा की प्रबल पक्षधर थीं। उन्होंने स्त्री-शिक्षा के लिए काफी काम किया। वह युवावस्था में विधवा हो गई थीं; सो, विधवाओं के संरक्षण के लिए उन्होंने 'शारदा सदन' खोला था।

स्वर्णकुमारी देवी रवींद्रनाथ ठाकुर की बहन थीं। वे 1885-86 में थियोसोफिकल सोसायटी की अध्यक्ष हुईं। उनका कहना था—नारी समाज की रक्षिका है। वह समाज की आदर्श शिक्षिका है। वह पुरुष के समान सक्षम है। उसी के समान अधिकार रखती है।

आशालता सेन बंगाल की थीं। 1864 में उनका जन्म हुआ था। उन्होंने परदा प्रथा का विरोध किया था। कहा था—परदा छोड़ें। परदे से बाहर आकर अपनी आजादी की घोषणा करें।

क्रांतिकारी भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव को 23 मार्च, 1931 को फाँसी दी गई।

फाँसी पर झूला झूल गया मर्दाना भगत सिंह
मर के हमें सिखला गया मर जाना भगत सिंह।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत महिला सशक्तीकरण पर कुछ पुस्तकें

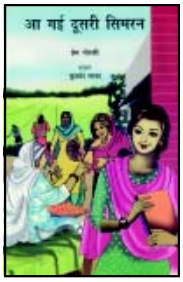

आ गई दूसरी सिमरन

प्रेम गोरखी

अनु. : फूलचंद मानव पृ. 18 ₹ 15.00

शिक्षा के बिना मनुष्य जीवन अधूरा होता है। शिक्षा है तो रोशनी है, जीवन में खुशी और आनंद है। शिक्षा का महत्व समझाती एक उपयोगी पुस्तक।

ISBN 978-81-237-6169-5

कोशी मेरी बेटी

आशा दुबे पृ. 16 ₹ 6.00

पिता के गुजर जाने के बाद कोशी ने हिम्मत नहीं हारी। उसने बचपन में मिट्टी के खिलौने बनाना सीखा था। बचपन का हुनर जीवन-यापन के काम आया।

ISBN 81-237-4080-8

घर लौट चलो

मीनाक्षी स्वामी पृ. 12 ₹ 7.00

संतान न होने के लिए पुरुष व महिला दोनों उत्तरदायी हैं। मात्र महिला को दोषी ठहराने को अनुचित बताती कहानी।

ISBN 81-237-1835-4

ठगिनी

सुबोध घोष; अनु. : देवलीना पृ. 32 ₹ 7.00

एक बाप-बेटी हमेशा भोले-भाले लोगों को शादी का झाँसा देकर माल हड़प कर जाते थे। आखिर एक दिन बेटी ही बाप को ठगकर अपने दूल्हे के साथ हमेशा के लिए घर छोड़ गई।

ISBN 81-237-2732-1

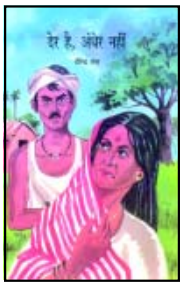

देर है अंधेर नहीं

वीरेन्द्र तंवर पृ. 12 ₹ 7.00

अपने आदमी के शक का शिकार हुई कला ने आत्महत्या क्यों की? उसके पति की गिरफ्तारी और थानेदार की नौकरी क्यों गई? पढ़िए मानवाधिकार पर केंद्रित एक असरदार रचना।

ISBN 81-237-2750-X

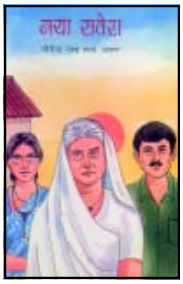

नया सवेरा

योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' पृ. 24 ₹ 13.00

ज्यादा बड़ा परिवार हो तो अलग तरह की समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। छोटे परिवार का संदेश जब डॉक्टरनी ने दिया तो दादी भी मान गई।

ISBN 81-237-4677-6

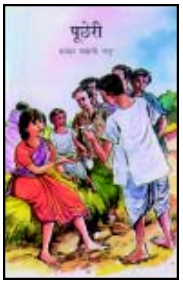

पूछेरी

मनोहर चमोली 'मनु' पृ. 16 ₹ 9.00

यह कहानी एक अनाथ किंतु जागरूक एवं साहसी लड़की पर केंद्रित है। उसकी दिलेरी को देखकर गाँव के मुखिया ने उसे अनाथ नहीं बल्कि पूरे गाँव की बेटी कहकर संबोधित किया।

ISBN 978-81-237-5498-7

भूल; *जैबुन्निसा 'हया'* पृ. 16 ₹ 9.00

प्रस्तुत कहानी एक अपाहिज किंतु स्वाभिमानी लड़की रेवती पर केंद्रित है। इसमें रेवती के माध्यम से समाज और परिवार में उपेक्षित विकलांगों के अदम्य साहस और उनके जन्मजात गुणों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है।

ISBN 978-81-237-5526-7

बुधिया का सपना

सतीश उपाध्याय पृ. 20 ₹ 10.00

स्त्री के जीवट पर केंद्रित कहानी। कैसे बुधिया पर जुल्म हुआ, लेकिन उसने हार नहीं मानी। थाने जाकर शिकायत कर न्याय की हकदार बनी बुधिया।

ISBN 81-237-4759-4

लखमी

धूमकेतु

अनु. : गीता जैन

रूपां. : चंद्रकांत सेठ पृ. 20 ₹ 6.00

गृहस्थी में बचत के महत्व को दर्शाती कहानी।

ISBN 81-237-1575-7

सुजाता की सास; *शिव मृदुल* पृ. 12 ₹ 8.00

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाया है। सुजाता की सास लड़के और लड़की में कोई भेद नहीं रखती है। सास के इस उदारवादी और ममतामयी व्यवहार से सुजाता की सास के प्रति पूर्व में बनाई गई गलत धारणाएँ टूट गईं।

ISBN 978-81-237-5559-5

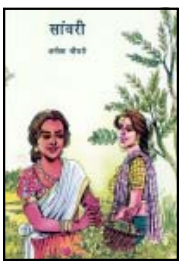

साँवरी; *अनीता चौधरी* पृ. 16 ₹ 13.00

गौरी और साँवरी जमींदार की दो बेटियाँ हैं जो अपने नाम के अनुरूप ही गोरी और साँवली है। साँवरी अच्छी शक्ल-सूरत की न होकर भी दिल से अच्छी थी। उसने गौरी सहित पूरे परिवार का हृदय परिवर्तन कर दिया।

ISBN 978-81-237-6175-6

चार कविताएँ, चार रंग

फागुन-दिन

शिवचरण चौहान, कानपुर, उ.प्र.

फागुन के फुर्तीले दिन
प्यारे रंग-रंगीले दिन।
सरसों के खेतों फूले
खुशबू भीने पीले दिन।
धूप शहद-सी चटा रहे
सबको खूब सजीले दिन।
कोंपल-कोंपल में लटके
मोती-से चमकीले दिन।
नाच रहे सब मस्ती में
छम-छम छैल-छबीले दिन।

दरिया की कसम, मौजों की कसम
ये ताना-बाना बदलेगा
तू खुद को बदल, तू खुद को बदल
तब ही तो जमाना बदलेगा!

पढ़ो तुम

मीना गुप्ता, आगरा, उ.प्र.

पढ़ो तुम
कि
बोलने लगेंगे अक्षर
गुनो तुम
कि
गुनगुनाने लगेगा
आसपास का वातावरण
लिखो तुम
कि
लिख पाओगी
भाग्य अपना!

लड़कियाँ

सुधा गुप्ता 'अमृता', कटनी, म.प्र.

ये हमारी और तुम्हारी
लड़कियाँ
खोल रहीं जिंदगी की सुंदरतम
खिड़कियाँ
थाम रहीं अब, कि देखो कलम
इनकी उँगलियाँ
अब सहेंगी क्यों भला, व्यर्थ की ये
झिड़कियाँ!

होली

लक्ष्मी विमल, डालटनगंज, झारखंड

साथ लिये जो प्यार है होली
एक उत्तम त्योहार है होली।
नीली, पीली, हरी, गुलाबी
रंगों की बौछार है होली।
मन को गद्‌गद करने वाली
शक्ति का संचार है होली।
नफरत दूर भगाने वाली
उल्फत का आधार है होली।
मिल्लत का पैगाम सुनाकर
एक कुशल व्यवहार है होली।
बनते ही प्रह्लाद की रक्षक
होलिका की हार है होली।
रावण को चित करने वाली
राम की जयजयकार है होली।

माँ-बहनों को पढ़ना सिखाएँगे हम
बदलेंगे जमाना
अक्षर की ज्योति जलाएँगे हम
बदलेंगे जमाना!

बेटियाँ, देहरी की शान
बेटियाँ, महकता उद्यान
देख-देखकर हर्षित
बेटियाँ, देश का अभिमान!

आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

बेटी को यदि आप पढ़ाओ
कई पीढ़ियाँ पढ़ जाएँगी
साक्षरता का बिगुल बजे तो
सारी जनता जग जाएगी।

रूपनारायण काबरा, जयपुर, राजस्थान

बेटियों को पढ़ाओ
उनका स्वाभिमान जगाओ
बेटियाँ रौनक हैं घर की
रौशनी हैं जग की
बेटियों को आगे बढ़ाओ!

डॉ. अंजना अनिल, अलवर, राजस्थान

माना कि अँधेरा घना है, पर दीया जलाना कहाँ मना है?

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ **सा. सं. : फरवरी, 2014 :** मातृभाषा दिवस पर प्रकाशित आलेख बहुत उपयोगी लगा। एनबीटी की पुस्तकों का परिचय पढ़कर नई-पुरानी पुस्तकों की जानकारी मिली। मंजुल की लघुकथा अच्छी है। छिटपुट काव्य रचनाएँ भी पठनीय थीं।

आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

☐ पत्रिका (**साक्षरता संवाद**) छोटी है, पर बहुत ही महान काम कर रही है। प्रकाशित सभी लेख, कविताएँ आदि पठनीय और संग्रहणीय होती हैं। पत्रिका को हमारे स्कूल में सभी छात्र वाचनालय में बैठकर बड़ी प्रसन्नता से पढ़ते हैं। साक्षरता के प्रति पत्रिका का काम सराहनीय है। **डॉ. सुनील कुमार परीट,** बेलहोंगल, बेलगाम, कर्नाटक

☐ **सा. संवाद** बराबर पढ़ती हूँ। यह साक्षरता प्रसार, प्रौढ़ शिक्षण, पुस्तकोन्नयन आदि के क्षेत्र में अनुपम कार्य कर रही है। साक्षरता संबंधी नई पुस्तकों का इससे परिचय मिलता है। देश की महान विभूतियों को समय-समय पर याद कर उनके बारे में लघु लेख का प्रकाशन या इन विभूतियों के विचारों का प्रकाशन कर आप सराहनीय काम कर रहे हैं। इसमें ज्ञान के साथ-साथ प्रेरणा भी है।

कांति अय्यर, सूरत, गुजरात

☐ विपुल सामग्री को इतने संक्षेप में और सारगर्भित रूप में प्रस्तुत करना गागर में सागर भरने जैसा कठिन कार्य है। आद्योपांत बहुरंगी छवियों से युक्त, सार्थक सामग्री से सराबोर अंक 'लघु विशेषांक' जैसा आकर्षक लगता है। कविताओं, क्षणिकाओं और महान विभूतियों के उद्धरणों का बेहतर उपयोग होता है यहाँ। जनवरी अंक अनेक मनभावन छवियों से भरा-पूरा था, अच्छा लगा।

जगदीश चंद्र शर्मा, गिलूंड, राजस्थान

☐ शिक्षा, साक्षरता से जुड़ी सामग्री और हिंदी भाषा से प्रेम को समर्पित **साक्षरता संवाद** के अंक पठनीय होते हैं। सशक्त, स्वस्थ, ज्ञानवर्धक सामग्री से युक्त यह पत्रिका सबके लिए उपयोगी है।

जवाहर लाल 'मधुकर', वडपलनी, चेन्नै, तमिलनाडु

☐ जनवरी अंक अपने आकर्षक कलेवर के साथ उपयोगी सामग्री से भी युक्त अंक था। महान व्यक्तित्वों के अमृत वचनों से ओतप्रोत इस मोहक अंक को पढ़कर मन गद्गद हो गया। कविताएँ प्रेरणाप्रद थीं और महान विभूतियों के संदेश/विचार जीवन को अग्रसर करने वाले। **सुगनचंद्र जैन 'नलिन',** गुना, म.प्र.

☐ जनवरी अंक में समयानुकूल सामग्री तो दी ही गई है इन्हें सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाया भी गया है। हमारे राष्ट्रीय नायकों को उनके जन्म एवं पुण्य तिथियों पर याद रखने की **साक्षरता संवाद** की अरसे से चली आ रही परिपाटी इस अंक में भी कायम थी। अंक पठनीय व संग्रहणीय है। **प्रकाश सूना,** मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

☐ **साक्षरता संवाद** श्रेष्ठ संवादों के साथ प्राप्त हो रहा है।
साक्षरता संवाद में, गुरु-मंत्रों सम ज्ञान
दृढ़ संकल्पित है सतत, हरने नित अज्ञान।

डॉ. बी. पी. दुबे, सागर, म.प्र.

☐ सरकारी काम भी 'असरकारी' हो सकता है **साक्षरता संवाद** इसका प्रमाण है। **राष्ट्रबंधु,** कानपुर, उ.प्र.

☐ **घर-आँगन में शाला बन रही, अब न करियो देरी**
देश का गौरव बनेगी, बात मान लो मेरी
घर बैठे समझा गए गुरु जी आके
हमारी प्यारी-प्यारी मुनिया के भाग्य जागे।

रामचरण यादव, बैतूल, उ.प्र.

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएँ ही भेजें–प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएँ संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएँ कृपया न्यास की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** *–संपा.*

बेटी मेरा लाल

डॉ. रानी कमल अग्रवाल, हापुड़, उ.प्र.

मैं रही अनपढ़
मुझको मलाल है
इसीलिए मेरा रहा
सदा बुरा हाल है
अपनी बेटी को मैं
खूब पढ़ाऊँगी
किसी-न-किसी लायक
उसको बनाऊँगी
फिर नहीं रहेगा मुझे
कोई मलाल है
मेरी बेटी मेरे लिए
मेरा तो लाल है।

मैं शाला को जाऊँगी

मीना गुप्ता, आगरा, उ.प्र.

स्कूल ड्रेस पहना दे अम्मा
मैं शाला को जाऊँगी
लाल रिबन से चोटी कर दे
मैं शाला को जाऊँगी
काले जूते मुझे पिन्हा दे
मैं शाला को जाऊँगी
मुझको तू एक बस्ता ला दे
मैं शाला को जाऊँगी
उसमें रख दे कलम-किताबें
मैं शाला को जाऊँगी।

कलम को आवाज बनाओ

भोमाराम बैरवा, दौसा, राजस्थान

विमला, गीता, कमली आओ
पढ़-लिखकर तुम साक्षर हो जाओ
असाक्षरता से तुम दूर हो जाओ
ज्ञान को तुम अपने जीवन में लाओ
कलम को तुम एक आवाज बनाओ
अज्ञानता को तुम दूर भगाओ
कठिन डर को तुम गले न लगाओ
मानवता का तुम शीघ्र पाठ पढ़ जाओ।

फूलों की कली-सी, नाजों में पली
बेटी तो सदा माँ-बाप के दिलों में बसी।

संगीता शर्मा, आगरा, उ.प्र.

हमको पढ़ा दे माँ

बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान'
गोरखपुर, उ.प्र.

माँ तू नहीं पढ़ी तो
हमको पढ़ा दे माँ
मेरा नाम स्कूल में
चल लिखवा दे माँ।

पढ़कर मैं किताब
अपना ज्ञान बढ़ाऊँगी
शिक्षा की मैं भी
देख अलख जगाऊँगी।

पढ़-लिखकर मैं
एक अच्छा इनसान बनूँगी
बनकर डॉक्टर, वैज्ञानिक
तेरा नाम ऊँचा करूँगी।

बस्ता लेकर मैं
रोज स्कूल जाऊँगी
पढ़-लिखकर मैं
अपना ज्ञान बढ़ाऊँगी।

सबला नारी

डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी, बरेली, उ.प्र.

पढ़-लिखकर सबला बनना
अनपढ़ बन रहने वाली
कष्टों को सहने वाली
पैरों के नीचे काँटे
जिन्हें नहीं दहने वाली
जाग-जाग कुछ सोच-समझ
नहीं तुझे अबला बनना।

सीखने की कोई उम्र नहीं होती, सीखने की मात्र चाह होनी चाहिए। चाह रास्ता स्वयं बना देती है।

जानो अपने हक को जानो, अपनी शक्ति को पहचानो
अपनी दशा सुधारो, शिक्षा का हथियार अपनाओ।

जीवन में कुछ करना है तो पढ़ना बहुत जरूरी है
सचमुच आगे बढ़ना है तो पढ़ना बहुत जरूरी है।

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें

हर विषय की पुस्तकें
अपनी भाषा में रोचक, ज्ञानवर्धक पुस्तकों का

सूची-पत्र मँगवाने के लिए आज ही निम्नलिखित पते पर संपर्क करें :

प्रबंधक (विक्रय एवं विपणन)

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in • वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/03/2014

रा.पु. न्यास से प्रकाशित नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत नई पुस्तक

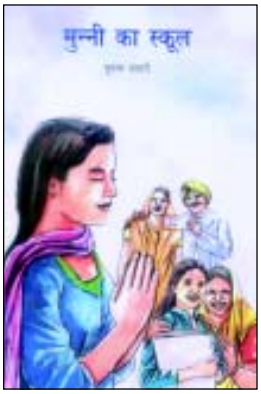

मुन्नी का स्कूल
सुषमा भंडारी
चित्र : शशि शेखर पिंटू पृ. 16 ₹ 15

सुनीता गाँव की एक साधारण परिवार की लड़की है। पिता साधारण कर्मचारी हैं। वह परिवार चलाने में अपना सहयोग देना चाहती है। उसकी मेहनत और भाग्य से उसे अध्यापिका की नौकरी मिल गई। वह नौकरी पर जाने लगी। जाने का साधन बस थी। बस स्टॉप के पास एक रेहड़ीवाले अपनी छोटी बेटी, मुन्नी की पढ़ाई की उससे चर्चा करता है। वह चाहता है कि मैडम के स्कूल में ही उसकी बेटी भी पढ़े। सुनीता कहती है, स्कूल जाकर पता करती हूँ। मुन्नी के पिता रातभर मुन्नी के स्कूल के बारे में सोचते हैं। वह सुबह का इंतजार करते हैं जब मैडम उसकी मुन्नी को स्कूल ले जाएँगी।

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत
nbt.india

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070